කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව
බාහිර විභාග අංශය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි ද්විතීය පරීක්ෂණය (බාහිර) - 2010
(2010 ජනවාරි/පෙබරවාරි)

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී - HIND E 2025

නූතන හින්දී සාහිත්‍ය ඉතිහාසය සහ නූතන හින්දී ගද්‍ය සාහිත්‍ය උද්ධෘත
(නියමිත හා අනියමිත)

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව: 06 යි

කාලය : පැය 03 යි

ප්‍රශ්න 05කට පමණක් පිළිතුරු සපයන්න. 01 ප්‍රශ්නය අනිවාර්යයි.
केवल **पाँच प्रश्नों** के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या **01** अनिवार्य है।

---

01. निम्नलिखित <u>किन्हीं दो</u> गद्यांशें की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

(क) सूर्य पृथ्वी से वाष्प रूप में जल ग्रहण करता है, फिर वर्षाकाल में वही जल पृथ्वी को लौटा देता है। जब सूर्य पृथ्वी से जल ग्रहण करता है तो किसी को ज्ञात नहीं होता, किंतु जब वह धारासार जल वर्षण करता है तो पृथ्वी का एक-एक अंकुर उस वारि-दान से हरा-भरा हो जाता है। राजा को सूर्य की भाँति व्यवहार करना चाहिए। वह प्रजा से अज्ञात रूप में धन ग्रहण करे और ज्ञात रूप में उसे लौटा दे। धन प्राप्ति के लिए प्रजा के रक्त की नदियाँ बहायी जाएँ, यह राजधर्म नहीं है।

(ख) "कह तो रही हूँ पक्का इरादा कर लो कि मैं पाँच हज़ार से अधिक खर्च न करूँगा। घर में तो टका है नहीं, कर्ज़ का ही भरोसा ठहरा। इतना कर्ज़ क्यों लें कि जिंदगी में अदा न हो। आखिर मेरे और बच्चे भी तो हैं, उनके लिए भी तो कुछ चाहिए।"

(ग) अंधकार के विकट वैरी महाराज अंशुमाली अभी तक दिखाई भी नहीं दिये। तथापि उसके सारथी अरुण ही ने, उनके अवतीर्ण होने के पहले ही, थोड़े ही नहीं, समस्त तिमिर का समूल नाश कर दिया। बात यह है कि जो प्रतापी पुरुष अपने तेज से अपने शत्रुओं का पराभव करने की शक्ति रखते हैं, उनके अग्रगामी सेवक भी कम पराक्रमी नहीं होते। स्वामी को श्रम न देकर वे खुद ही उसके विपक्षियों का उच्छेद कर डालते हैं।

(घ) ".....,, तुम ठीक कहते हो। बिलकुल ठीक। जेल का सत्यानाश हो, हाकिमों का सत्यानाश हो। लेकिन प्यारे, मैं क्या करूँ? न मुझसे बैठा जाता है, न इन फूलों की दुर्गत देखी जाती है। माफ़ करो, दवा दो—उफ, जाड़ा लग रहा है!"

02. भारतेंदुयुगीन साहित्यिक परिस्थिति पर प्रकाश डालिए। (20 अंक)

अथवा

निम्नलिखित साहित्यकारों में से **किन्हीं दो** की साहित्यिक सेवा का परिचय दीजिए।

(क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (घ) मुंशी प्रेमचंद

(ख) मैथिलीशरण गुप्त

03. निम्नलिखित गद्यांशें में से **किसी एक** की भावार्थ सहित व्याख्या कीजिए। (20 अंक)

वर्षा को ऋतुओं की रानी कहा गया है। सचमुच, यह ऋतुओं की रानी है। अषाढ़, सावन और भादो (जुलाई, अगस्त और सितंबर) – इन तीन महीनों में आकाश में उजले-काले, उमड़ते-घुमड़ते बादलों की छटा दर्शनीय होती है। धरती पर रिमझिम बूँदों की आवाज़ गूँजने लगती है। प्रकृति बहुरंगे फूलों से चित्रित हरी चूँनर पहनकर इठला उठती है। नदी-नद, ताल-तलैया जलमय हो जाते हैं। यों तो वर्षा के आगमन से सभी प्राणी प्रसन्न हो उठते हैं, किंतु किसानों की प्रसन्नता को शब्दों में बाँधा नहीं जा सकता। आकाश में बादलों को देखकर उनके सपने साकार होते नज़र आते हैं। उनके हृदय में उल्लास की तरंगें उठने लगती हैं - धरती सोना उगलेगी; पशुओं को चारा मिलेगा; ऋण का बोझ हल्का होगा; घर धन-धान्य से परिपूर्ण होगा; पेड़-पौधे फूल देंगे।

अथवा

मनुष्य के जीवन में हार-जीत, यश-अपयश आदि सभी होते हैं। सुख के साथ दुख भी होता है। पर यदि मनुष्य का मन दुखी और सफलता से निराश हो जाता है, तो वह कभी उन्नति नहीं कर सकता, क्योंकि किसी भी कार्य की सफलता में मन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मन यदि सशक्त है तो मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों में भी महान कार्य कर सकता है, परंतु यदि मन ही हार गया तो जीवन में कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता। कभी-कभी निर्धन एवं साधन-हीन मनुष्य भी सफल होते हुए देख जाते हैं और अत्यंत धनी व साधन-संपन्न व्यक्ति असफल, परंतु सफलता-असफलता का प्रमुख कारण मन की स्थिति है।

04. 'प्रेमचंद ने **निर्मला** उपन्यास में तत्कालीन अनेक सामाजिक समस्याओं को उभारा है।' सोदाहरण इस कथन की पुष्टि कीजिए। (20 अंक)

05. '**महाकवि माघ का प्रभात वर्णन** शीर्षक निबंध में लेखक ने प्रकृति का मनोरम वर्णन किया है।' सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (20 अंक)

अथवा

रजिया रेखाचित्र में निरूपित रजिया का चरित्र-चित्रण कीजिए।

06. निम्नलिखित नाटक-पात्रों में से **किन्हीं दो** का चरित्र-चित्रण कीजिए। (20 अंक)

(क) हरिषेण

(ख) सम्राट समुद्रगुप्त

(ग) काच